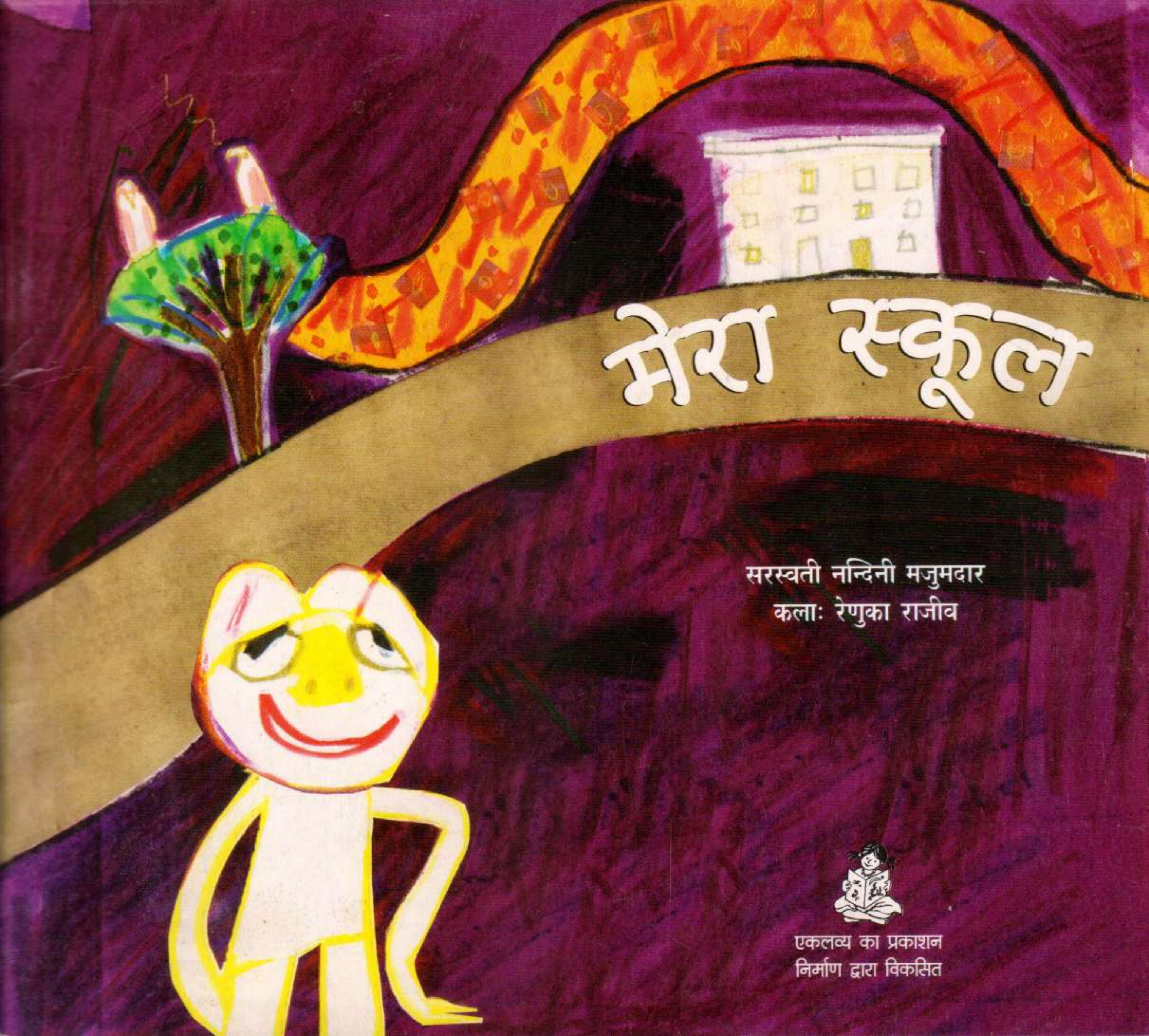


मेरा स्कूल

सरस्वती नन्दिनी मजुमदार
कलाः रेणुका राजीव

एकलव्य का प्रकाशन
निर्माण द्वारा विकसित



मेरा स्कूल

कथा - सरस्वती नन्दिनी मजुमदार
कला - रेणुका राजीव
अँग्रेज़ी से अनुवाद - टुलटुल विश्वास

एकलव्य का प्रकाशन
निर्माण द्वारा विकसित



मेरा स्कूल

MERA SCHOOL

कथाः सरस्वती नन्दिनी मजुमदार
कलाः रेणुका राजीव
अँग्रेज़ी से अनुवादः टुलटुल विश्वास

फरवरी 2014 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः **100 gsm** मेपलिथो व **270 gsm** पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट व नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से निर्माण, वाराणसी द्वारा विकसित

ISBN: 978-93-81300-95-4
मूल्यः ₹ 45.00
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है। **ISBN: 978-93-81300-94-7. Price: ₹ 60.00**

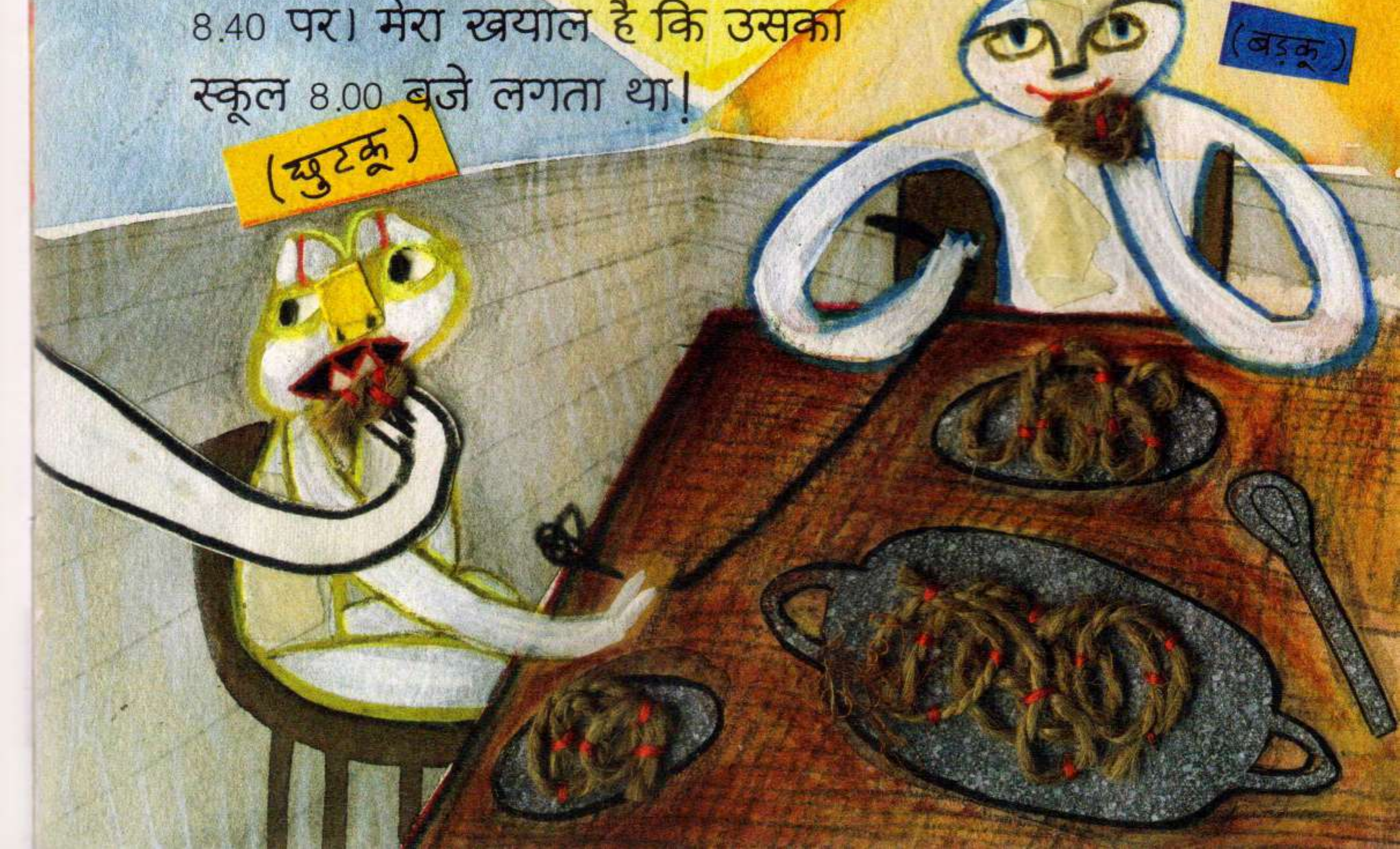
प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर.के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

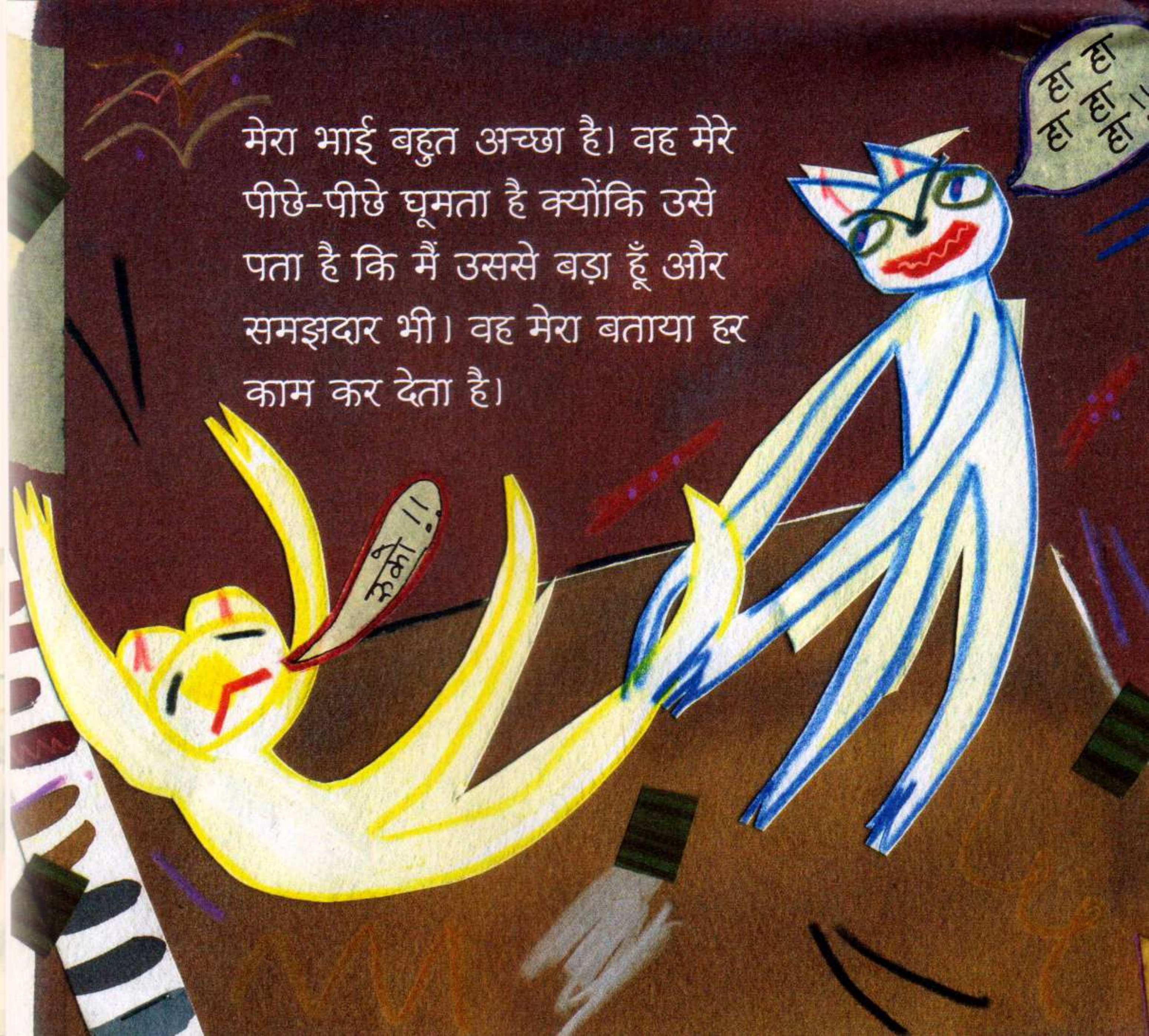
इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

मेरा छोटा भाई स्कूल जाना शुरू करने वाला है। वह पाँच साल का है। मैं दस

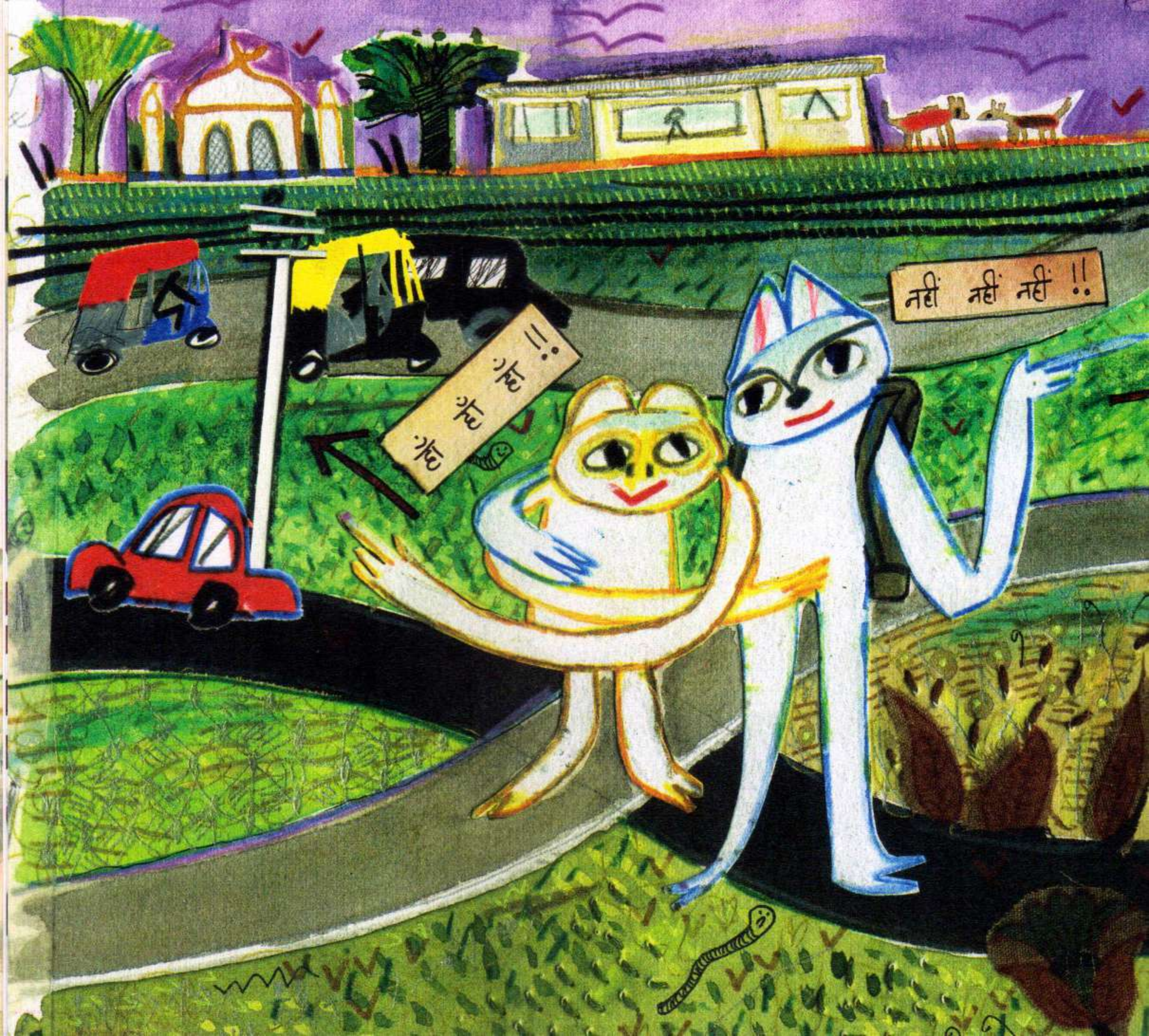
अभी तक वह केवल नर्सरी स्कूल जाता था। मज़ेदार था – वह कभी सुबह 8.10 पर जाता, कभी 8.30 पर, और कभी तो 8.40 पर। मेरा खयाल है कि उसका स्कूल 8.00 बजे लगता था।

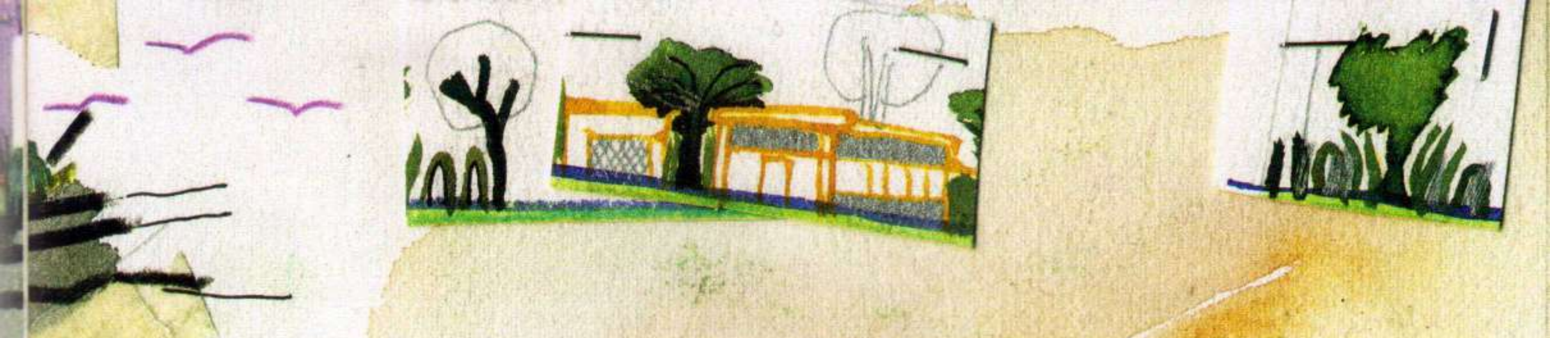


मेरा भाई बहुत अच्छा है। वह मेरे पीछे-पीछे घूमता है क्योंकि उसे पता है कि मैं उससे बड़ा हूँ और समझदार भी। वह मेरा बताया हर काम कर देता है।

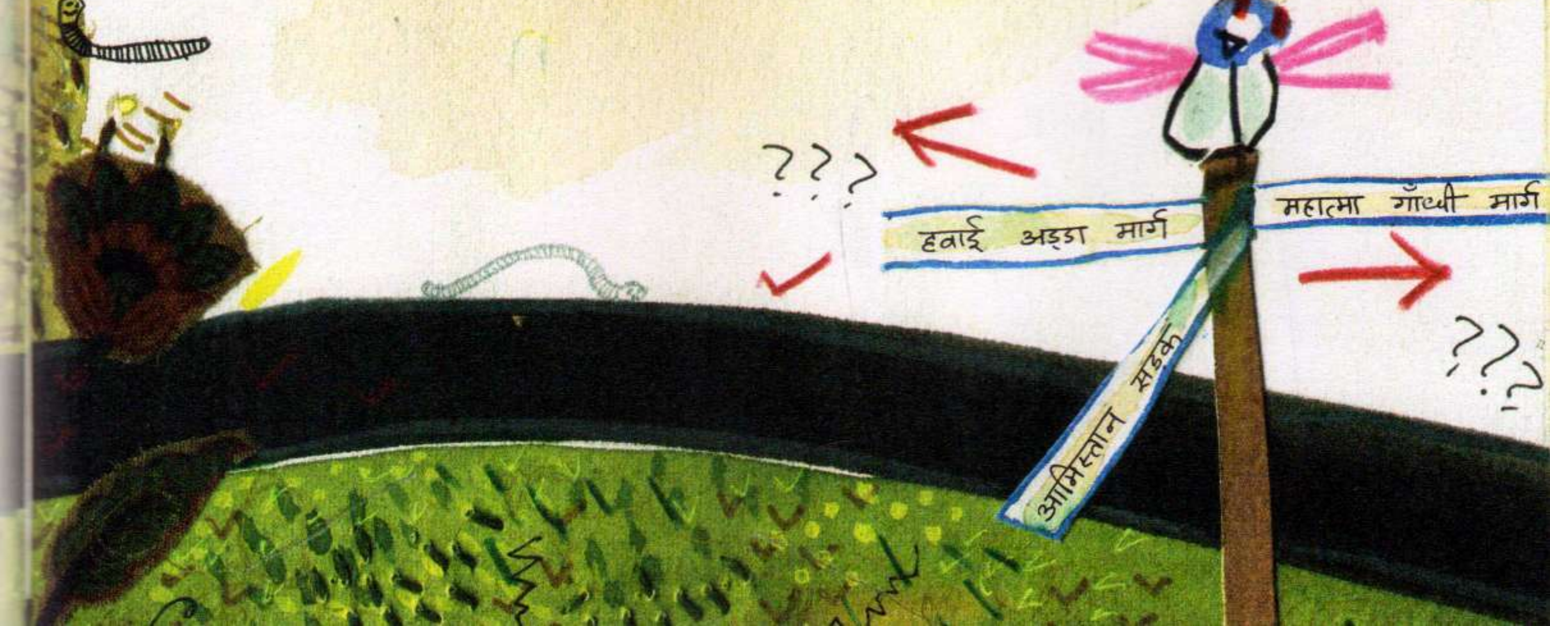



वह मेरी हर बात पर यकीन करता है।
ये मैंने
भी सुना
सुनो !
सुनो !
सुनो !


हाँ हाँ हाँ !!
नहीं नहीं नहीं !!



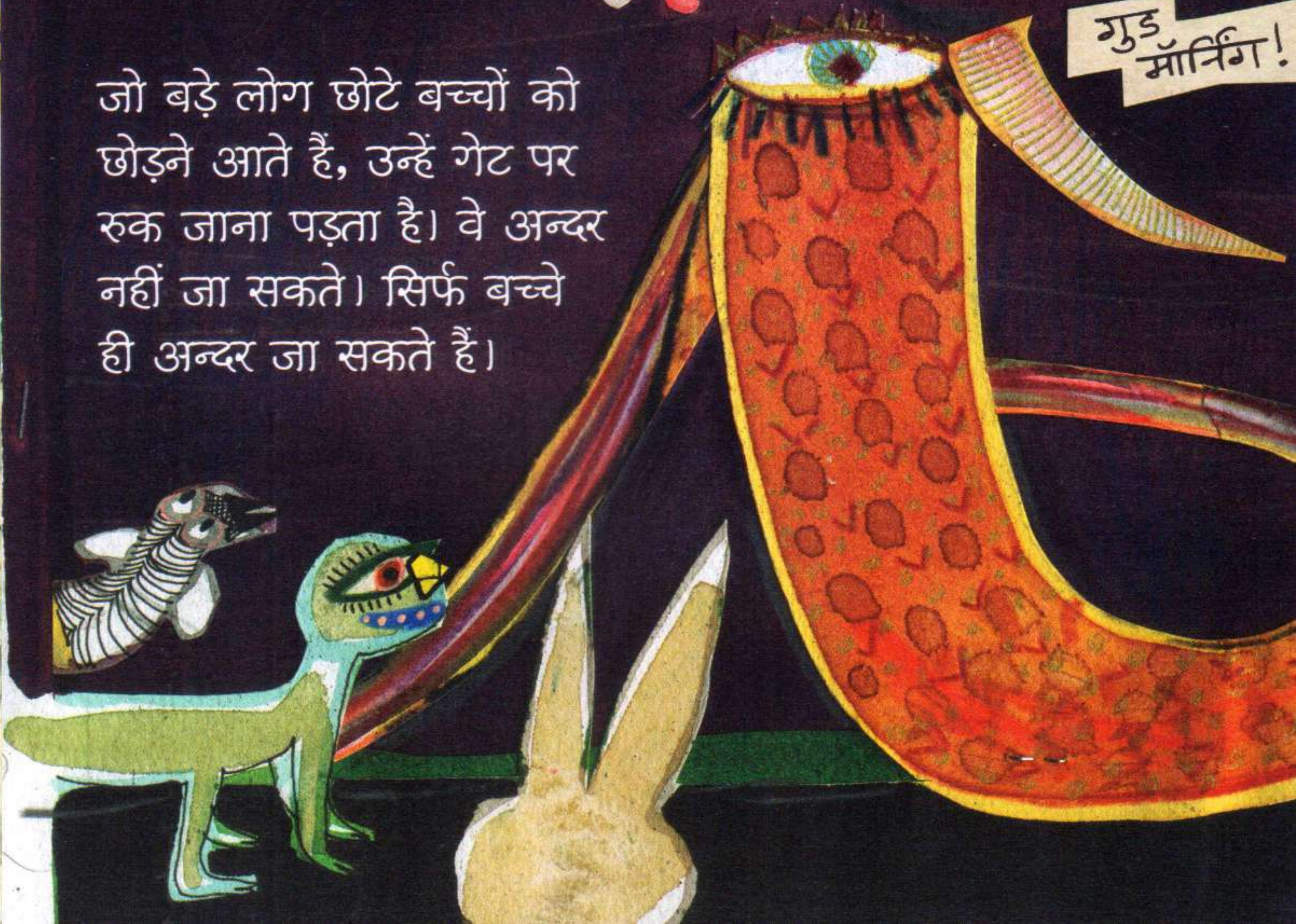
आज स्कूल में उसका पहला दिन है। यह अच्छा है कि वह मेरी हर बात पर विश्वास कर लेता है, क्योंकि मैं उसे स्कूल के दौरे पर ले जाने वाला हूँ।





यह गेट है। गेट पर गार्ड खड़े रहते हैं। उनका नाम है गार्ड भैया।

जो बड़े लोग छोटे बच्चों को छोड़ने आते हैं, उन्हें गेट पर रुक जाना पड़ता है। वे अन्दर नहीं जा सकते। सिर्फ बच्चे ही अन्दर जा सकते हैं।




प्राथमिक शाला
माध्यमिक शाला
हैलो !

कोई बहस नहीं।

कोई बहाना नहीं।

अगर किसी बड़े ने अन्दर घुसने की कोशिश की तो गार्ड भैया गुर्राते हुए अपना पंजा आगे करके उन्हें रोक देते हैं।



गार्ड भैया की आँखें अन्दर जाने वाले हरेक बच्चे को देखकर चमकती हैं।



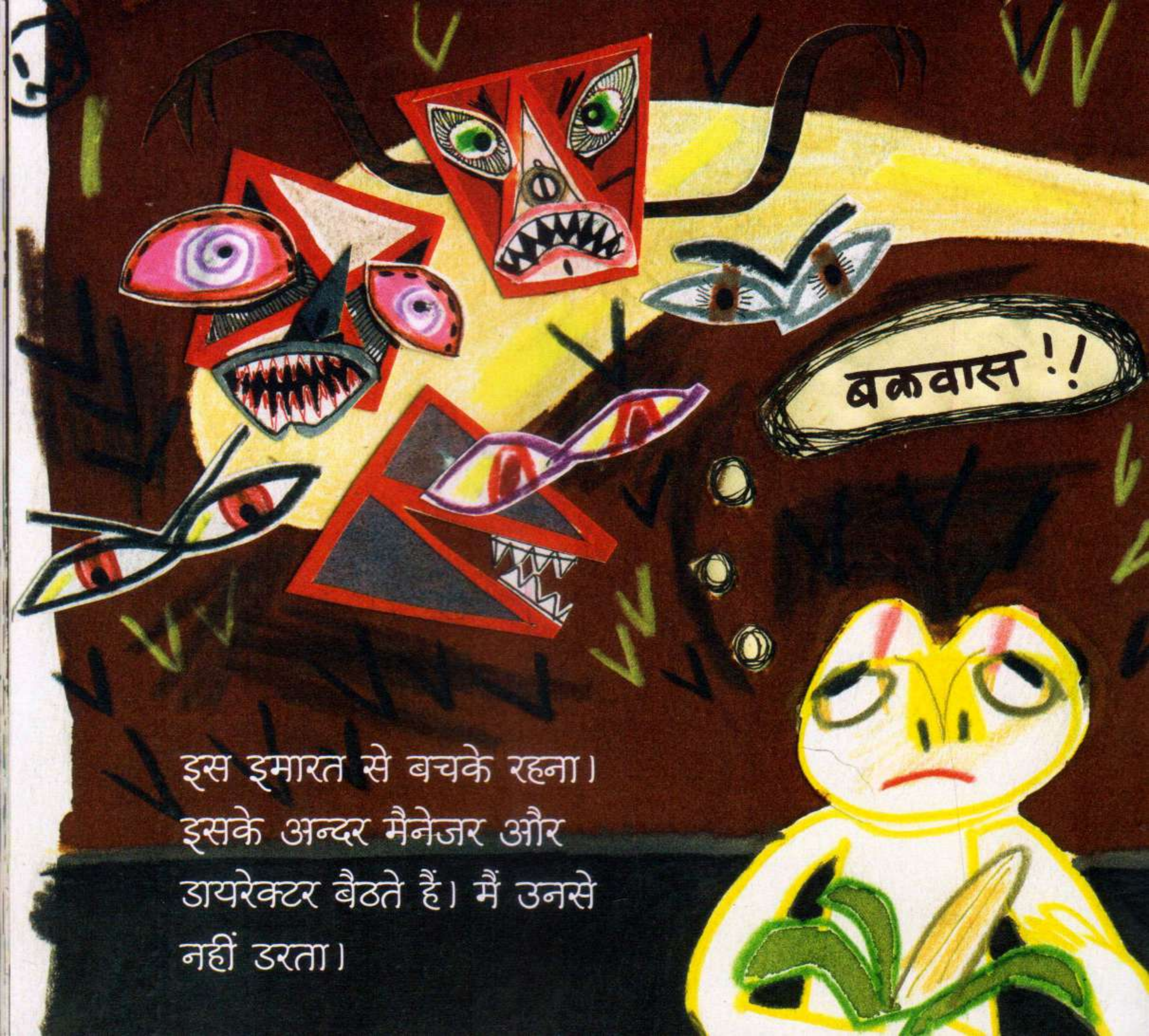

पुष्पा
मैडम
बता
रही हैं
आ कृ ति

यह है बहुत छोटे बच्चों का क्लासरूम,
मेरे भाई से भी छोटे।

ये सिर्फ खेलने आते हैं।
दोपहर में सो भी जाते हैं।
ये बहुत शोर करते हैं।

इनकी टीचर हैं पुष्पा मैडम।





इस इमारत से बचके रहना। इसके अन्दर मैनेजर और डायरेक्टर बैठते हैं। मैं उनसे नहीं डरता।

पर तुम्हें बचके रहना होगा क्योंकि तुम नए और छोटे हो और वो तुम्हें नहीं जानते।



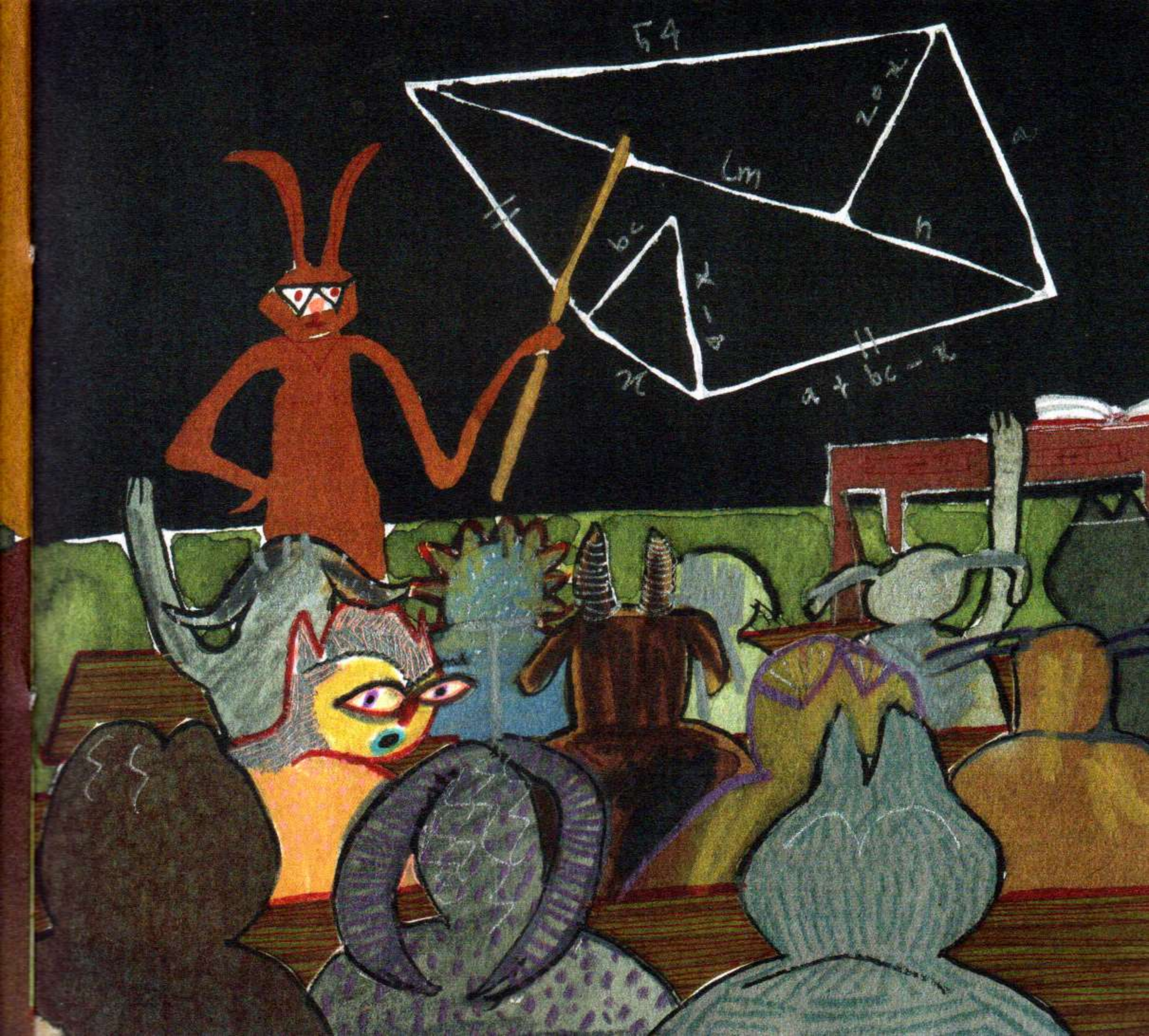
वो तुम्हें खा भी सकते हैं...



यह मेरी क्लास है। यह एक खतरनाक जगह है।

यहाँ बड़े-बड़े बच्चे हैं, और बहुत सारे टीचर भी।





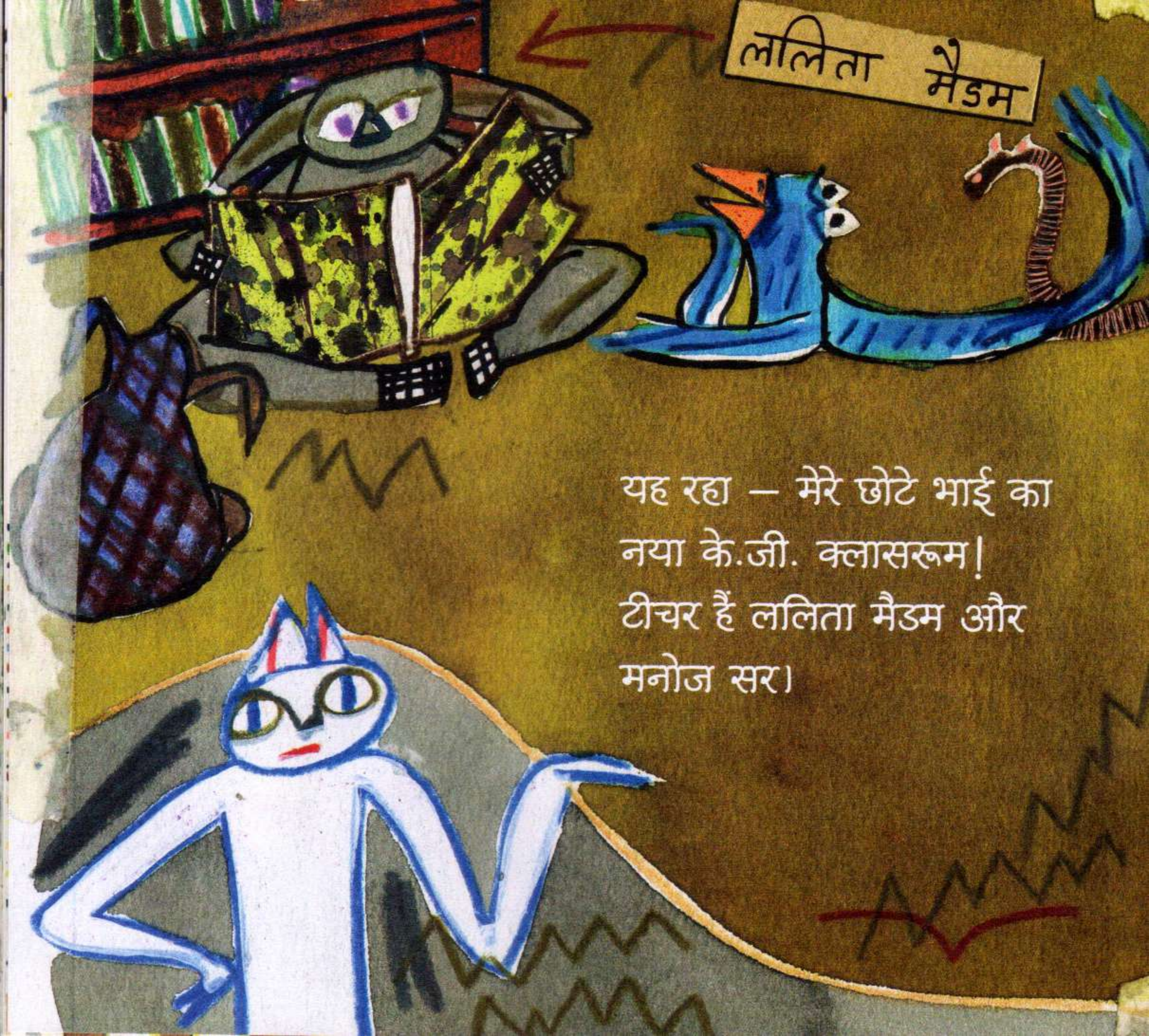


वहाँ पीछे बढ़ई भैया और उनके सहायक हैं। वे दिन भर आरी और रन्दा चलाते रहते हैं। अगर तुम अच्छे बच्चे हुए तो तुम वहाँ से लकड़ी की कुछ छीलन ले सकते हो।



वह रही सारे कमरों की सफाई करने वाली दीदी। अगर तुमने ध्यान नहीं दिया तो वह तुम्हें भी उठाकर वहीं पटक देंगी जहाँ तुम्हें होना चाहिए।


बढ़ई भैया
दीदी →

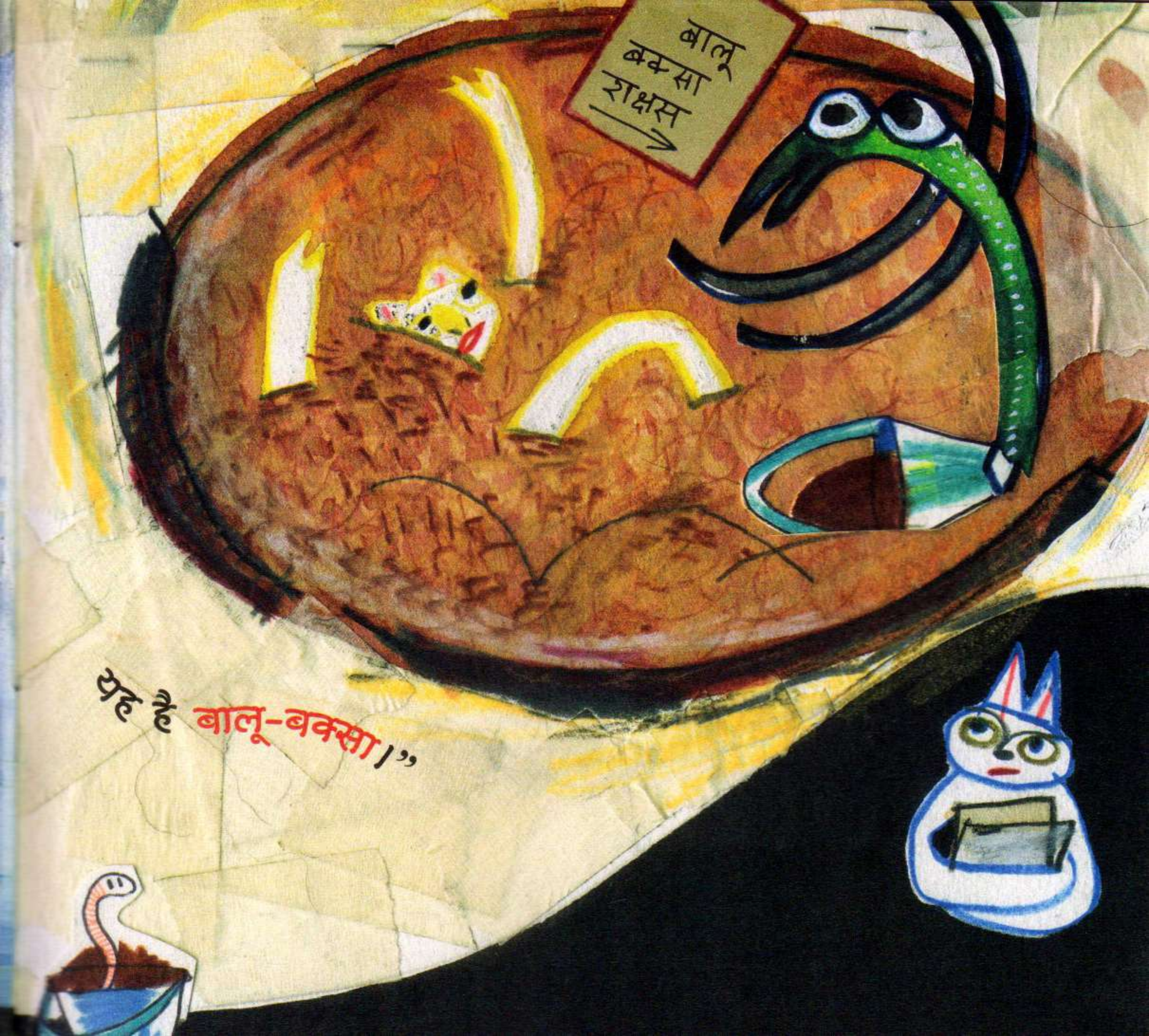


यह रहा – मेरे छोटे भाई का
नया के.जी. क्लासरूम!
टीचर हैं ललिता मैडम और
मनोज सर।

"डरो मत। हम मिल-जुलकर बहुत
सारी मज़ेदार चीज़ें करने वाले हैं"




“ये रहीं किताबें।
मांस
खीर
As the new aliens arrived
didn't see the point
but carrie on as
बहरहाल!
DARK AND FUNNY BOOKS
DOOMED!
CORNERED!
खतरनाक कहानियाँ
दूसरों की कहानियाँ

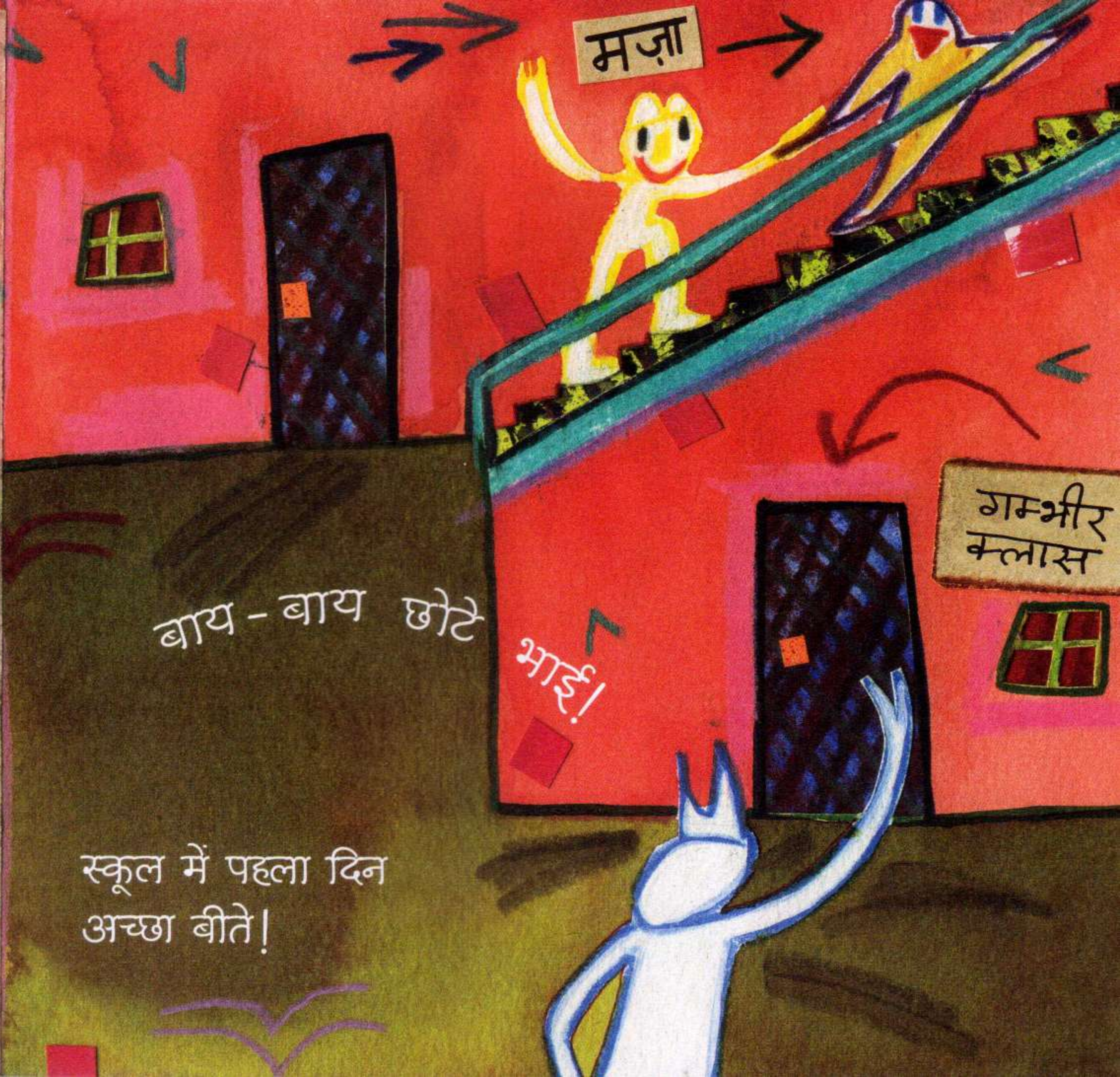


यह है बालू-बक्सा।”

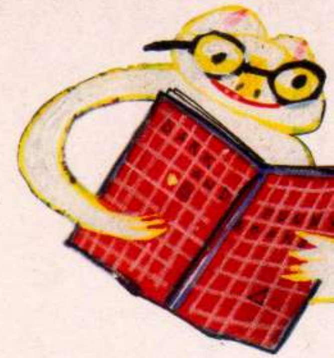

कितने अलग-अलग



तरह के बच्चे!


मज़ा
गम्भीर क्लास
बाय-बाय छोटे भाई!
स्कूल में पहला दिन अच्छा बीते!

रेणुका राजीव ने सृष्टि, बंगलुरू से डिजिटल विडियो तथा मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया से फाइन आर्ट की पढ़ाई की है। बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाने में उनकी खास रुचि है। इस किताब के चित्रांकन का काम उन्होंने निर्माण, वाराणसी के साथ एक स्टूडियो प्रोजेक्ट के दौरान किया है।







सरस्वती नन्दिनी मजुमदार लेखक और संगीतकार हैं। वे वाराणसी में एक गैर-सरकारी संस्था – निर्माण – में शिक्षा और कला विषयों पर बच्चों, युवाओं, कलाकारों और शोधकर्ताओं के साथ काम करती हैं। बच्चों के लिए लिखी किताबों के अलावा उन्होंने वाराणसी पर भी एक किताब लिखी है।



स्कूल का परिचय देती एक अलग-सी कहानी जिसमें आपको मौका मिलता है एक बच्चे की नज़र से स्कूल और उसके किरदारों से मिलने का।



मूल्य: ₹ 45.00

A1240H

9 789381 300954

एकलव्य

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित